IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन

रमाकान्त यादव

शोध–छात्र

शिक्षाशास्त्र विभाग, सी.एम.पी.कॉलेज

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम का क्या योगदान है इस पर विद्यार्थियों का दृष्टिकोण जानने के लिए स्नातक स्तर के कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन में 7 शून्य परिकल्पनाएँ बनी है जिसमें से 4 शून्य परिकल्पनाएं अस्वीकृत हो गयी है जिनके स्थान पर शोध परिकल्पना स्वीकृत हुई और 3 शून्य परिकल्पनाएं स्वीकृत की गयी हैं।

मुख्य बिन्दु– व्यक्तित्व विकास, एन.एस.एस. कार्यक्रम, स्नातक स्तर के विद्यार्थी।

प्रस्तावना–

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का एक साधन के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व विकास के पूर्ण विकास का सोपान भी है। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसी पाठ्यक्रम के आधार पर ही विभिन्न विद्यालयों के क्रिया–कलाप नियंत्रित होते है। पाठ्यक्रम में मुख्यतः दो प्रकार की क्रियाएं आयोजित होती है– 1- पाठ्य क्रियाएं 2- पाठ्य–सहगामी क्रियाएं। पाठ्य–सहगामी क्रियाएं छात्रों के व्यक्तित्व के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। एन.एस.एस. भी एक तरह की पथ–सहगामी क्रिया है। अतः इसके अंतर्गत होने वाली सभी गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास से होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सामूहिक कार्य, नेतृत्व क्षमता, सम्प्रेषण कौशल, सृजनात्मक क्षमताओं का विकास आदि क्रियाएं विद्यार्थियों से करवायी जाती है। व्यक्तित्व के विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

सिंह,रंग बहादुर (1999). ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज में एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया तथा पायें कि एन.एस.एस. में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं–

1. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं वाणिज्य के वर्ग विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विज्ञान एवं वाणिज्य के वर्ग विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद विश्वविद्यालय व उसके सम्बद्ध डिग्री कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद विश्वविद्यालय व उसके सम्बद्ध डिग्री कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम में भाग लेने वाले 100 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सरल यादृच्छिकरण विधि से चुना गया है।

उपकरण–

अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया। विषय–विशेषज्ञों से प्राप्त सुझाव के आधार पर एक अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया, जिसमें 25 कथन है। प्रत्येक कथन के सामने तीन विकल्प वाले उत्तर दिये गए हैं जो सहमत, असहमत एवं अनिश्चित के रूप में हैं शोध परिकल्पना के परीक्षण के लिए t–परीक्षण का प्रयोग 0-05 सार्थकता स्तर पर किया गया है।

प्रदत्तों का संकलन–

इलाहाबाद विश्वविद्यालय व इसके सम्बद्ध महाविद्यालयों के 100 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से प्रदत्तों का संकलन अभिवृत्ति मापनी के माध्यम से किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एंव निष्कर्ष–

इलाहाबाद विश्वविद्यालय व इसके सम्बद्ध महाविद्यालयों से एन.एस.एस. के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मापनी में ज परीक्षण के 0.05 स्तर पर विश्लेषण किया गया जो निम्न प्रकार है–

तालिका–01

क्रम संख्या	शोध की शून्य परिकल्पना	स्नातक स्तर के विद्यार्थी	Mean Score	S.D.	N	प्राप्त t मान	सार्थकता स्तर
1	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के दृष्टिकोण की तुलना	शहरी छात्र ग्रामीण छात्र	38.44 37.06	6.41 4.5	16 34	.76	N.S.
2	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के दृष्टिकोण की तुलना	शहरी छात्रा ग्रामीण छात्रा	40.53 35.82	8.8 4.46	32 17	2.47	S.

3	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलना	शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थी	39.80 36.62	5.26 4.57	50 50	3.24	S.
4	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण की तुलना	छात्र छात्राओं	37.5 38.92	5.24 4.92	50 50	1.41	N.S.
5	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलना	विज्ञान वर्ग वाणिज्य वर्ग	41.38 35.80	3.18 5.92	40 35	5.03	S.
6	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलना	विज्ञान वर्ग वाणिज्य वर्ग	41.38 36.68	3.18 4.79	40 25	4.27	S.
7	व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलना	विज्ञान वर्ग वाणिज्य वर्ग	35.80 36.68	5.92 4.79	35 25	.63	N.S.

नोट– S.= स्वीकृत, N.S.= अस्वीकृत

परिकल्पना – 1 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के दृष्टिकोण की तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (38.44 से 37.06) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में शहरी छात्रों ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t–मान .76 पाया गया, यह df=48, स्तर–.05 पर t मूल्य–2.01 से कम है। अतः व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 2 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के दृष्टिकोण की तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (40.53 से 35.38) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में ग्रामीण/शहरी छात्राओं ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t मान–2.47 पाया गया। अतः df=47 स्तर–.05 पर t मूल्य– 2.01 से परिगणित t मान–2.47 अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना – 3 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (39.80 से 36.62) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में ग्रामीण/शहरी विद्यार्थियों ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t मान–3.24 पाया गया। अतः df= 98 स्तर .05 पर ज मूल्य– 1.98 से परिगणित ज मान–3.24 अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना – 4 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण की तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (38.92 से 37.50) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में छात्र एवं छात्राओं ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t मान–1.41 पाया गया, यह df= 98 स्तर .05 पर प्राप्त t मूल्य– 1.98 से कम है। अतः व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 5 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (41.38 से 35.80) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t मान– 5.03 पाया गया। अतः df =73 स्तर–.05 पर ज मूल्य– 1.99 से परिगणित t मान– 3-24 अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना – 6 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं वाणिज्य वर्ग का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (41.38 से 36.68) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में कला एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t मान– 4.27 पाया गया। अतः df = 63 स्तर–.05 पर t मूल्य– 2.00 से परिगणित t मान– 4.27 अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के कला एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया गया।

परिकल्पना – 7 व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–

तालिका–1 में स्पष्ट है कि व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों का अधिकतम मत तीन बिंदु मापनी में सबसे अधिक (35.80 से 36.68) स्तर के पाए गये।

एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्नातक स्तर के अधिकांश संख्या में विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों ने महत्त्व दिया है औसत प्रतिक्रिया की तुलना में t मान– .63 पाया गया, यह df = 58 स्तर–.05 पर प्राप्त ज मूल्य–2.00 से कम है। अतः व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. कार्यक्रम के योगदान के प्रति स्नातक स्तर के विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ–

प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में होने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है निष्कर्षतः यह पाया गया है कि एन.एस.एस. कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा, मनोरंजन, साक्षरता, स्कूली शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, खेल–कूद, पर्यावरण संरक्षण, साफ–सफाई एवं सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन से सम्बंधित जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है छात्र इसके माध्यम से खुद को जागरुक कर सकते है। इसमें छात्रों को आपातकाल की परिस्थिति में निपटने का प्रशिक्षण दिया जाता है ये सब क्रियाये

पाठ्यक्रम में हो तो छात्र अच्छी तरफ से इसके प्रति क्रिया शील होगें। एन.एस.एस. कार्यक्रम में स्वास्थ्य, रक्तदान, जनसंख्या शिक्षा, आदि के प्रति लोगों को जागरुक किया जाता है जिससे वे स्वयं के साथ का स्वास्थ्य विकास करते हैं तथा साथ ही उनमें राष्ट्रीय और सामाजिक सद्भावना का भी विकास होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, रंग बहादुर (1999). इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज में एन.एस.एस. कार्यक्रम में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, पीएच.डी. थीसिस, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज।
- कुमार बी. एकं साहू पी.के. (2017). अध्यापक शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन (शोध पेपर) पृष्ठ 25 से 52] पब्लिसर्स अकादमी संपादक न्यूपा, नई–दिल्ली।
- सिंह, सोमवीर (1985). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन, पीएच. डी थीसिस।
- गुप्ता, एस.पी. (2011). अनुसन्धान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- पाण्डेय, के.पी. (2008). शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।